

---

# Vichitra Charita Stotram

---

## विचित्रचरितस्तोत्रम्

---

### Document Information

---

Text title : Vichitracharita Stotram

File name : vichitracharitastotram.itx

Category : shiva, ApaTIkara

Location : doc\_shiva

Author : ma. sa. ApaTIkara

Transliterated by : Mandar Mali aryavrutta gmail.com

Proofread by : Mandar Mali aryavrutta gmail.com

Description/comments : stotrapanchadashI by Shri M. S. Apatikar, Satara

Source : Sharada year 11, Vol 21-22, September 1970

Acknowledge-Permission: Pt. Vasant A. Gadgil, Sharada Gaurava Granthamala, 425 Sadashv  
Peth, Pune 30

Latest update : September 14, 2019

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose. Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

September 15, 2019

*sanskritdocuments.org*

---

विचित्रचरितस्तोत्रम्



(वसन्ततिलका)

भिक्षाचरोऽपि जगतामधिपोऽसि भिक्षो  
कण्ठे विषं तव तथाप्यमृतप्रदस्त्वम् ।  
स्थाणुस्तथापि भजतां फलदोऽसि नित्यं  
तुभ्यं विचित्रचरिताय नमो नमस्ते ॥ १ ॥

शम्भो भवोऽसि हि तथापि भवान्तकस्त्वं  
कामान्तकोऽपि शरणागत-कामदस्त्वम् ।  
योगीन्द्र-पूजित विभोऽसि नटेश्वरस्त्वं  
तुभ्यं विचित्रचरिताय नमो नमस्ते ॥ २ ॥

त्वं निर्मलोऽसि हि तथापि दधासि भाले  
कालाङ्कितां शशिकलां रमणीयमूर्तिम् ।  
तत्रैव चापि नयने वहसि त्वमग्निं  
तुभ्यं विचित्रचरिताय नमो नमस्ते ॥ ३ ॥

हस्ते तवास्ति हर भीतिकरस्त्रिशूल-  
स्तापत्रयं हरसि तेन विभो नराणाम् ।  
पापं च नाशयसि मस्तकगाङ्गवारा  
तुभ्यं विचित्रचरिताय नमो नमस्ते ॥ ४ ॥

देहे तवास्ति शवदेहविभूतिलेपः  
शम्भोस्तथापि जनभूतिकरः प्रभो त्वम् ।  
भोगीन्द्र-भूषण सदाऽभयदोऽसि देव  
तुभ्यं विचित्रचरिताय नमो नमस्ते ॥ ५ ॥

कण्ठे धृतास्ति नरमुण्डकपालमाला  
पावित्र्यमूर्तिरसि रुद्र तथापि भोस्त्वम् ।  
दृष्टिः समाऽस्ति विषमेक्षण लोकनाथ

तुभ्यं विचित्रचरिताय नमो नमस्ते ॥ ६ ॥

यज्ञप्रियोऽपि भगवन्नसि यज्ञनाशी  
वैराग्यमूर्तिरपिशङ्कर सानुरागः ।  
यक्षाधिपस्तव सखास्ति तथापि भिक्षु-  
स्तुभ्यं विचित्रचरिताय नमो नमस्ते ॥ ७ ॥

वृद्धो वृषो वहनमस्ति तवाष्टमूर्ते  
पादारविन्दनमनाय तथापि शक्रः ।  
ऐरावतादवनिमेत्य विनम्र आस्ते  
तुभ्यं विचित्रचरिताय नमो नमस्ते ॥ ८ ॥

स्तोत्रं विचित्रचरितस्य शिवस्य प्रात-  
र्भक्त्या स्मरेदहरहः शुचिमानसो यः ।  
तापत्रयं जगति तस्य विनाश्य शम्भुः  
कीर्तिं धनं च विपुलं प्रददाति तस्मै ॥ ९ ॥

इति श्री आपटीकरविरचितं विचित्र-चरित-स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

Encoded and proofread by Mandar Mali aryavrutta gmail.com

---

—  
*Vichitra Charita Stotram*

pdf was typeset on September 15, 2019

—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

